भारत में यूरोपियनों का आगमन

भारत और यूरोप के मध्य प्राचीनकाल से व्यापारिक सम्बन्ध थे। भारत से यूरोप को अनेक वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। भारत से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में मसाले, वस्त्र तथा कलापूर्ण और उपयोगी वस्तुएँ होती थीं। यूरोप के नागरिकों के आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए भारत पर निर्भर होने से यह व्यापार अत्यधिक व्यापक था। इससे भारत को रोम साम्राज्य आयातित वस्तुओं के लिए बड़ी मात्रा में स्वर्ण भी देता था।

व्यापारिक मार्ग

भारत और यूरोप के मध्य व्यापार स्थल तथा जल मार्गों से होता था। स्थल व्यापार के दो प्रमुख मार्ग थे- प्रथम, उत्तरी मार्ग आक्सस नदी से केस्पियन सागर होता हुआ काला सागर जाता था और कुस्तुन्तुनिया जाकर समाप्त होता था। द्वितीय, मध्यम मार्ग था जो ईरान और सीरिया होता हुआ भूमध्य सागर तक जाता था।

तृतीय, दक्षिण का जलमार्ग था। यह समुद्री मार्ग भारत के पश्चिमी तट से अरब सागर, फारस की खाड़ी और लाल सागर से मिस्र तक जाता था। उसके बाद नील नदी से भूमध्यसागर पर स्थित सिकन्दरिया बन्दरगाह तक जाता था। यह समुद्री व्यापार अरबों के हाथों में था। लेकिन भूमध्यसागर में व्यापार वेनिस और जेनेवा के व्यापारियों द्वारा होता था।

सातवीं शताब्दी में इस्लाम के उत्थान के पूर्व स्थल मार्गों का अधिक प्रयोग होता था। भारतीय व्यापार यूरोपीय व्यापारियों के लिये अत्यधिक लाभप्रद था। उनका प्रयत्न इस व्यापार से अधिक-से-अधिक लाभ उठाने का रहता था। इसमें इटली के वेनिस तथा जेनेवा के व्यापारी सबसे अधिक सक्रिय थे और उन्होंने अपने व्यापारिक जहाजी बेड़ों के द्वारा भारतीय व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था।

इस्लाम के उत्थान का प्रभाव

सातवीं शताब्दी में इस्लाम के उत्थान के बाद ईरान, पश्चिमी एशिया और मिस्र पर अरबों का अधिकार हो जाने के कारण भारत और यूरोप के व्यापार में बाधा उत्पन्न हो गई। यद्यपि इससे व्यापारिक संकटों तथा व्यय में वृद्धि हो गई, अगली दो शताब्दियों तक यह व्यापार चलता रहा। चौदहवीं शताब्दी तक भारतीय व्यापार इस स्थिति में भी यूरोप और भारत के व्यापार में वृद्धि होती रही। यूरोपीय व्यापारियों में इस व्यापार से लाभ उठाने के लिये तीव्र स्पर्धा हो रही थी।

यूरोप में भी नये प्रतिस्पर्धी इस व्यापार में सम्मिलित हो गये। विशेष रूप से उत्तरी यूरोप के देश अब भारतीय माल को लाने वाले इटालियन जहाजों (वेनिस, जेनेवा, फ्लोरेन्स) के जहाजों की प्रतीक्षा नहीं करते थे, बल्कि अब वे भूमध्यसागर में अपने जहाज भेजने लगे। इसमें डच हंसा लीग प्रमुख थी। इसमें हॉलैंड के अनेक नगरों ने सक्रिय भाग लिया था। इस व्यापार के फलस्वरूप उत्तरी यूरोप के ये नगर अत्यंत समृद्धशाली व्यापारिक केन्द्र बन गये।

इस्लाम के उत्थान के बाद भी समुद्री व्यापार अनवरत चलता रहा। अरबों ने इस समुद्री व्यापार पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था और यह व्यापार उनकी समृद्धि का प्रमुख स्रोत था। मिस्र का सुल्तान प्रत्येक व्यापारी से कुल माल के मूल्य का तिहाई भाग काली मिर्च के रूप में लेता था और काली मिर्च भी व्यापारी को कालीकट के व्यापार भाव पर देनी पड़ती थी।